॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अनमोल वचन

आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि।

(यजु० १९.४८)

यज्ञ की हवि आत्मिक बल, प्रजा और पशुधन देती है।

वर्ष ३३, अंक १२ एक प्रति : ३ रुपये
सोमवार १८ जनवरी, २०१० से २४ जनवरी, २०१० तक
विक्रमी सम्वत् २०६६ दयानन्दाब्द : १८६
सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११० वार्षिक : १५० रुपये
फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
Website : www.delhisabha.com पृष्ठ सं १ से ८ तक

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल का 111वाँ स्थापना वर्ष

बंगाल प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन कोलकाता में सोल्लास सम्पन्न

समय के साथ बदलाव कर युवाओं को आर्यसमाज के निकट लाना आवश्यक -महाशय धर्मपाल

महर्षि दयानन्द की कॉमिक का बंग्ला में अनुवाद होगा एवं पुरस्कार योजना के साथ प्रकाशन भी– दीनदयाल गुप्त, महामंत्री बंगाल सभा

समय बीतने के साथ–साथ संस्थाओं की जिम्मेदारियाँ बढ़ती भी हैं बदलती भी हैं उसी प्रकार आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल की भी जिम्मेदारियाँ बढ़ी हैं यदि हम बदलते माहौल को देखकर अपने कार्यों को करने तौर–तरीको को बदलेंगे तो आर्य समाज को जन–जन तक पहुँचाने में हम कुछ विशेष कार्य कर सकेंगे आज सबसे बड़ी आवश्यकता नौजवान पीढ़ी को आर्यसमाज से जोड़ने की है जिसके लिए हमें विशेष प्रयास करने होंगे। यदि हम नए तरीकों को अपना कर युवा पीढ़ी को अपने साथ जोड़ने में कामयाब रहे तो आर्यसमाज अपने उद्दश्यों की निश्चित रूप से पूर्ति कर सकेगा। उक्त विचार आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान एवं आर्य नेता महाशय धर्मपाल

– शेष पृष्ठ 8 पर

स्वामी दयानन्द के कई ग्रन्थों का बंग्ला हुआ प्रकाशन व विमोचन।

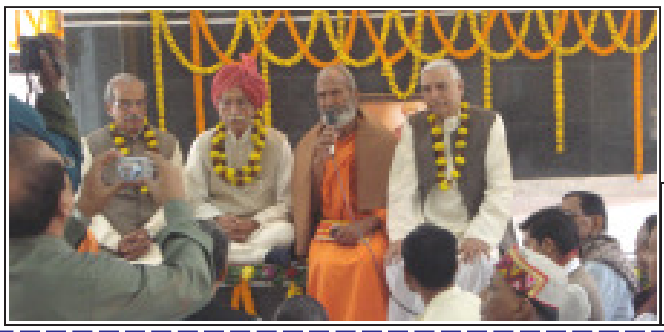

आर्यसमाज के नवनिर्मित भवन के उद्घाटन के अवसर पर आर्यजनों को सम्बोधित करते आचार्य बलदेव जी साथ में हैं सर्वश्री आनन्द कुमार आर्य, महाशय धर्मपाल जी एवं श्री दीनदयाल गुप्त जी।

19वां विश्व पुस्तक मेला– प्रगति मैदान, नई दिल्ली : 30 जनवरी से 7 फरवरी, 2010

उद्घाटन : 30 जनवरी, 2010 (शनिवार) समय : प्रातः 11.00 बजे

पहले से दुगुना होगा इस बार सभा का वैदिक साहित्य प्रचार स्टाल

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने गत वर्षों की भांति इस वर्ष नई दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित होने वाले 19वें विश्व पुस्तक मेलों में वेद, आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा वैदिक धर्म से सम्बन्धित समस्त साहित्य के प्रचारार्थ स्टाल बुक कराया है। आर्यजनों से निवेदन है कि अधिकाधिक संख्या में स्टाल पर पधारकर तथा अन्य लोगों को स्टाल पर पधारने की प्रेरणा करके कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें। हॉल एवं स्टाल नम्बर की सूचना अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी।

निवेदक : *ब्र. राजसिंह आर्य, प्रधान (9350077858) विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441) सुखबीर सिंह आर्य, संयोजक (9350502175)*
रमेश आर्य, महेन्द्र सिंह आर्य, शिव कुमार मदान, वीरेन्द्र सरदाना, ओम प्रकाश भटनागर, अशोक गुप्ता एवं अन्य सभी कार्यकर्ता

आर्यसमाज गोमांस परोसे जाने का विरोध करेगा

इस वर्ष भारत में राष्ट्रमंडलीय (कॉमनवेल्थ) खेलों का आयोजन हो रहा है। भारत सरकार की खेल आयोजन समिति और दिल्ली सरकार के सचिवों के वक्तव्य समाचार–पत्रों में आ चुके हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय नियमों के अधीन हम अपने विदेशी अतिथियों के भोजन में गो–मांस भी परोसेंगे। इस पर तीव्र प्रतिक्रिया करते हुए 4 जनवरी, 2010 को दिल्ली नगर निगम के नेता भाजपा के श्री सुभाष आर्य ने प्रस्ताव रखा कि हम गो–मांस परोसने की किसी भी कीमत पर अनुमति नहीं देंगे, ऐसा करना देश के लिए शर्म की बात है। नेता विपक्ष श्री जे. के. शर्मा (कॉंग्रेस) ने भी इस प्रस्ताव को पूरा समर्थन देते हुए घोषणा की हम भी पूरी तरह गो–गांस परोसना सहन नहीं करेंगे। यह प्रस्ताव सर्वसम्मत से पास हुआ।

इस सम्बन्ध में अपना विरोध सरकार तक पहुंचाएं। आर्यजनता अधिक से अधिक विरोध पत्र प्रधानमन्त्री डॉ. मनमोहन सिंह के नाम 7, रेसकोर्स रोड नई दिल्ली के पते पर तथा एवं खेलमन्त्री एम. एस. गिल – 12, मदर टेरेस क्रीसेंट रोड, नई दिल्ली–1 1 के नाम भेजें। – विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)

इस समाचार से प्रेरित हो कर 17 जनवरी को आर्यसमाज, करोलबाग में आयोजित सर्वपन्थ गोष्ठी में स्वामी प्रणवानन्द जी, श्री जसवीर सिंह नामधारी, श्री प्रमोद जैन आदि ने सुरेन्द्र सिंह द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव का समर्थन किया और कहा कि सरकार गो–मांस परोसने से बाज आए अन्यथा इसकी भयंकर प्रतिक्रिया हो सकती है। 18, जनवरी को इस अभियान को पूरी शक्ति से चलाने धरने आदि आयोजित करने के लिए गो–मांस परोसने विरोधी अभियान समिति बनाई गई। सरदार परमजीत सिंह सरना, भाई दयासिंह, माधवाश्रम जी महाराज भक्त आदि ने अपनी स्वीकृति प्रदान की।

– प्रो. जयदेव आर्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा

आर्यसमाज कीर्ति नगर के सहयोग से

महर्षि दयानन्द सरस्वती

के 186वें जन्मदिवस समारोह के उपलक्ष्य में

सुमधुर भव्य भजन संध्या

दिनांक 8 फरवरी, 2010 सायं 3.30 से 7 बजे

स्थान : कीर्ति पार्क, एफ ब्लाक, डेसू के पीछे, कीर्ति नगर, नई दिल्ली–15

इस अवसर पर पश्चिम दिल्ली की आर्यसमाजों की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के नवनिर्वाचित अधिकारियों का अभिनन्दन भी किया जाएगा।

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करें।

-: निवेदक :-

ब्र. राजसिंह आर्य (प्रधान) अनिल तनेजा (कोषाध्यक्ष) विनय आर्य (महामन्त्री)
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)–15, हनुमान रोड, नई दिल्ली
ओमप्रकाश आर्य (प्रधान) सतीश चड्ढा (मन्त्री) विश्वनाथ मक्कड़ (कोषाध्यक्ष)
आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली–1100015

प्रेरक व्यक्तित्व

निष्ठावान मिशनरी – महात्मा श्यामसुन्दर आर्य

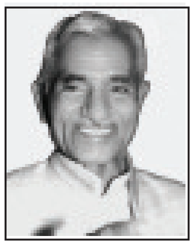

95 वर्षीय श्री श्यामसुन्दर आर्य समर्पित वैदिक धर्म के अद्‌भुत दीवाने थे। उन्होंने सैकड़ों प्रचारकों के जीवन–निर्माण में भारी मदद की। वे सदैव मानवता की सेवा में संलग्न रहे। ये उद्‌गार भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी ने अशोक विहार फेस –1 में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में 10 जनवरी को व्यक्त किये। श्री श्यामसुन्दर आर्य का निधन 30 दिसम्बर को हो गया था।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य ने कहा कि वे श्वेत वस्त्रों में महात्मा थे। सादा जीवन उच्च विचार के पोषक थे। उनके सुपुत्र श्री अरुण बंसल ने महात्मा श्याम सुन्दर आर्य का वैदिक रीति से अंत्येष्टि संस्कार कर उनके अवशेष श्यामसुन्दर आर्य गुरुकुल, बादली स्थित उद्यान में दबाकर वृक्षारोपण का उत्तम कार्य किया। यह वैदिक ऋषियों की आर्ष पद्धति का प्रेरणादायी सत्कार्य है। महात्मा श्याम सुन्दर आर्य पिछले 15 वर्षों से बादली (रोहतक) में आचार्य महेन्द्र शास्त्री व श्री धर्मेन्द्र पाण्डे के सहयोग से गुरुकुल चला रहे थे।

आर्य केन्द्रीय सभा के निवर्त्तमान प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, वैदिक विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार, आचार्य सुखदेव तपस्वी, डॉ. महेन्द्र नागपाल (विधायक) साध्वी सुमेधा दर्शनाचार्या, पत्रकार चन्द्रमोहन आर्य आदि सहित अनेक राजनेताओं व अग्रवाल समाज के प्रतिनिधियों, गुरुकुल बादली के विद्यार्थियों ने श्री आर्य जी को अपनी श्रद्धांजलि दी।

स्मरणीय है कि सन् 1983 में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर अजमेर में आचार्य राजसिंह आर्य, जी के नेतृत्व में 1000 युवकों की स्पेशल रेल सेवाव्रत हेतु गई, वहाँ श्री श्यामसुन्दर आर्य जी ने 1 लाख महर्षि जीवन पर सचित्र ट्रैक्ट प्रकाशित कराकर, 10 रुपये सैकड़ा उपलब्ध कराया था।

The Sixteen Rituals of Aaryas

Seemantonnayan sanskaar

(The ritual for the mental development of foetus)

A child born in the eighth month, often, does not survive. This makes it clear that according to **Sushrut,** the child in a womb of five months develops a more aroused mind than in the fourth month when the brain only starts forming. This is the reason why the Seemantonnayan sanskaar is performed in the fourth month. The sole purpose of this ritual is that the mother should completely understand that from this point on, she owns responsibility for her child's mental development. Whatever she does from now on, should be done with the knowledge that every thought of hers is unconsciously affecting the child taking shape within her. If not performed in the fourth month, the ritual can be carried out in the sixth month or even eighth month. One of these three months (fourth, sixth, eighth) should be chosen for Seemantonnayan sanskaar. The fourth suits because during this month, the formation of brain cells begins. The sixth suits as during the sixth month, the first origin of intelligence can be traced and eighth is suitable because by that time, the body, mind, brain and heart of the foetus are all ready. This is the time when the woman is called 'twin-hearted' as two hearts work simultaneously. So in this situation, the mother should pay special attention to maintain the functionality of the child's body, mind, brain and heart as the child delivered in eighth month rarely survives.

The lack of desire for any particular thing on part of the pregnant woman leads to a disinclination of the child too for the same thing. Similarly, whatever the mother desires for, the child also starts desiring for the same. The framers of the system of rituals strongly held that the mother's impressions have an all-round effect on the child and therefore, Seemantonnayan sanskaar was given a significant place. Manusmriti (Chapter 9, verse 9) says: The kind of image a pregnant woman draws in her mind is similar to the kind of the child she bears.

So, for an excellent offspring equipped with supreme impressions, the woman should be kept in a conducive environment.

- Gyaaneshwaraarya, *Darshanacacharya*
To be continued....

देववाणी : संस्कृत

स्वामिदयानन्दस्य राजनैतिकं चिन्तनम्

गतांक से आगे –

यस्य राज्ञः सत्य–न्यायोपदेशका धार्मिका विद्वांसः स्युः स विद्या–विनयादि–शुभैर्गुणैः सहितः सन् सर्वानभयान् कृत्वा सततं प्रसादयितुं शक्नुयात् (द.भा;) तथा चान्य मन्त्रभाष्ये–राजा चाप्त विदुषामनुशासने तिष्ठन् राज्यं वर्धयेत् (द्र. ऋ. 4.19.10)। एवं हि महाभारते वर्णितं यद्विदुषामष्टाशीतिः सहस्राणि युधिष्ठिर–गृहे सततं वसन्ति स्म। एवं चान्यत्र भाष्ये – विद्वत्सेवायां तु राज्ञाऽप्रमत्तेन भवितव्यम्। तेभ्यो यथावत्साधन–व्यवस्था च कार्या। तेन ते सत्य–धर्म–प्रचारं कर्तुं शक्नुयुः। **विद्वद्भिरुपदेशकैश्च राजपुरुषा राजा च व्यसनेभ्यो विमोच्यास्तदर्थमुपदेशो देयः (द्र.य.27.8) विद्वद्भिश्च मिथ्या स्तुतिर्विहाय धर्म्याणि कार्याणि प्रशंसनीयानि (ऋ.3.34.7)।**

उपरि वर्णितानुसारेण स्वामि–दयानन्द–मतं सुस्पष्टं यद्राज्ञा सभ्यैश्च विद्वांस उपासनीया इति। राज्यपालने च विद्यायाः प्रामुख्यमनेन द्योत्यते। अत एव प्रजापालनार्थं निर्मितासु तिसृषु सभासु द्वे विद्या–धर्मावाश्रित्यैव। तत्र च विदुषामेव सदस्यत्वम्। यद्यपि प्रजापालनं राजार्य–सभयैव कार्यमिति राजार्यसभायाः प्रामुख्यमुक्तं तथापि राजार्य–सभायाः सामर्थ्यमन्ययोर्द्वयोरेवाश्रितमिति तयो राज्य–व्यवस्थायां महत्त्वं राजार्य–सभाया महत्त्वमतिशेते।

अतएव तयोरपि सभयोर्विषये किंचित्स्वामि–दयानन्द–मतमुच्यते।

तत्र विद्यार्यसभया अध्यापकाध्यापिके बालक–बालिकानाम् अध्यापनार्थं यथा–योग्यमर्थादुत्तमाध्यापका उत्तमविद्यार्थिभ्यो मध्यमा मध्यमेभ्यः प्रथमाः प्रथमेभ्यो नियुज्येरन् (द्र. यजु. 7. 47)। अर्थाद्देशेऽध्ययनाध्यापन–व्यवस्था विद्यार्यसभया निरीक्षणीया न्यूनताश्च पूरणीयाः। न कदाचिद्देशे व्यवस्थाया अभावात्पठन –पाठनं कुण्ठितं स्यात्। इतरथा उत्तम–प्रजा–निर्माणं तदन्तरा च सुखं दुर्लभं स्यात्। विद्यार्थिनां परीक्षणार्थं च व्यवस्था समया कार्या (द्र.य. 34. 54)। अध्यापकाश्च विद्यार्थिनो मध्ये मध्ये परीक्षेरन् (द्र.ऋ.5.14.70.,5.75. 1)। सिद्धान्तेषु च ज्ञानकर्मोपासना काण्डेषु विदुंषा मध्ये ये मतभेदार तेषां विषये तर्कादिशास्त्राणामाधारेण वादमाध्यमेनैकमतं संस्थाप्य तस्यैव जनेषु प्रचारः कार्यः (द्र.य. 23.33) एवं दयानन्दमते विद्याया व्यवस्था विद्वद्भिरेव कार्या। तत्र च

– आचार्यो रवीन्द्रः, आर्ष विश्वविद्यालयम् वडलूरु, कामारेड्डी (आं.प्र.)
(राष्ट्रिय संस्कृत संगोष्ठी, 5–6 सितम्बर,09 को पाठित निबन्ध)

क्रमशः

बोध कथा

मोह ममता के रिश्ते हैं सब कोई नहीं यहां अपना रे!

– महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

गतांक से आगे :–

महात्मा जी ने फिर टाल दिया।

अन्त में एक दिन युवक ने दुःखी होकर कहा– "महाराज! आखिर कब तक परीक्षा देनी होगी? मुझमें कौन–सी कमी है, जिसके कारण आप मुझ पर कृपा नहीं कर रहे?"

महात्मा उसे पास बिठाकर बोले– "कृपा करने की बात नहीं है बेटा! जिस समाधि–अवस्था में तू जाना चाहता है, वहाँ पहुँचने से पूर्व घर–बार, संसार और परिवार का मोह छोड़ देना पड़ता है। इतने दिनों से मैं प्रतीक्षा कर रहा था, सोचता था कि स्वयं ही समझकर इस मोह को छोड़ देगा। परन्तु देखता हूँ कि तू इस मोह को छोड़ नहीं पाता। इसलिए समाधि लगाने की विधि तुझे बता नहीं सका।"

युवक ने कहा– "परन्तु गुरुदेव! इस मोह को कैसे छोड़ दूँ? यह तो सत्य है कि मेरी माँ है और पिता है, मेरी पत्नी है"

महात्मा बोले – "नहीं बेटा! यह सत्य नहीं, वहम है। जिन्हें आज तू माता, पिता और पत्नी कहता है, ये सदा से तेरे माता, पिता और पत्नी थे नहीं, सदा रहेंगे भी नहीं। सच्ची माता, पिता और मित्र तो वह परमात्मा है, जिसके लिए शास्त्र कहता है:–

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

"तू ही माँ है, तू ही पिता है, तू ही मेरा साथी, तू ही मेरा धन है। तू ही महल और मकान है, तू ही मेरा सब कुछ है, मेरे देवताओं के देवता!"

युवक ने कहा– "यह सत्य है गुरुदेव कि ईश्वर हमारा सब कुछ है, परन्तु माता–पिता और दूसरे लोग भी सत्य हैं। उनसे मैं इन्कार कैसे कर सकता हूँ ? भूल कैसे सकता हूँ ? मेरे पिता मेरे लिए प्राण देते हैं। मुझे थोड़ा सा कष्ट हो जाय तो बेचैन हो उठते हैं। मेरी माँ तो एक दिन भी मुझे देखे नहीं तो उसके लिए संसार अन्धकारमय हो जाता है। और मेरी पत्नी तो हर समय मेरे नाम का जाप करती रहती है। आप कहते हैं, इनके मोह को छोड़ दे। कैसे छोड़ दूँ?"

महात्मा बोले –"तू वहम में फँस गया है बच्चे! कोई तेरे लिए प्राण नहीं देता, कोई तेरे लिए बेचैन नहीं होता, कोई भी तेरे नाम का जप नहीं करता।

– क्रमशः

धर्मवीर हकीकत राय के बलिदान दिवस वसंत पंचमी पर विशेष

धर्म की खातिर मैं बलिदान हो जाऊँ

भावी सन्तानों में आर्य चेतना, धर्म–अनुराग, आत्मगौरव एवम् देशप्रेम आदि उत्पन्न करने में भारत के महान पुरुषों की जीवनियाँ जो कार्य कर सकती हैं उतना अन्य कोई साधन नहीं कर सकते। धर्म पर मर–मिटने के लिए तो बहुत हुए परन्तु धर्म की खातिर मरकर भी जीवित रहा तो वह 14 वर्षीय अमर बलिदानी धर्मवीर हकीकत राय। पंजाब की पावन धरती पर सन् 1719 के दिन भागमल खत्री के घर जननी माता कौरां की पवित्र कोख से तेजस्वी वीर बालक का जन्म हुआ। उस समय मुगलों का शासन था। राज्यों की वास्तविक बागडोर सूबेदारों तथा नवाबों के हाथों में थी। तलवार के बल पर निर्दोषों के गले काटे जा रहे थे। ऐसे समय में पंजाब के 14 वर्षीय निडर बालक वीर हकीकत राय अत्याचार के विरुद्ध सीना तान कर खड़ा हुआ।

उस समय मुसलमानों का शासन होने के कारण फारसी राज्य की भाषा थी। माता–पिता ने उसका नाम हकीकत राय रख दिया। हकीकत का अर्थ सच्चाई होता है और प्रतीत होता है कि होनहार बालक भी माता के गर्भ से सच्चाई की भावना लेकर पैदा हुआ था। इकलौती संतान होने के कारण माता–पिता ने पुत्र को बड़े लाड़–प्यार से पाला। बचपन से ही वह मेधावी तथा प्रतिभाशाली था। सरकारी भाषा फारसी होने के कारण फारसी का जानना आवश्यक था। इस विचार से माता–पिता ने फारसी की शिक्षा के लिए उसे कमतब (विद्यालय) में मौलवी साहिब के पास भेजा। प्रतिभाशाली होने के कारण थोड़े ही समय में अपने सहपाठियों से पढ़ाई में आगे निकल गया। वह परीक्षा में सर्वप्रथम आता और इनाम पाता था। इस कारण सहपाठी उससे ईर्ष्या करते थे। एक दिन मौलवी साहिब ने एक मुसलमान विद्यार्थी को पाठ सुनाने के लिए कहा तो वह अपना पाठ न सुना सका। इस पर मौलवी साहिब ने डाँटते हुए कहा –''तुझसे तो वह हिन्दू लड़का ही अच्छा है जो अपना पाठ सरलता से सुना देता है और तू मुसलमान होकर अपनी ही भाषा का पाठ नहीं सुना सकता।'' अपमानजनक शब्द सुनकर वह लड़का पानी–पानी हो गया । उसने हकीकत से बदला लेने तथा तंग करने की योजना बनाई। मौलवी साहिब नमाज पढ़ने के लिए निकट की मस्जिद में चले गये तो लड़के हकीकत राय को तंग करने लगे तथा अभद्र व्यंग करने लगे। इस पर हकीकत राय बोला – '' मित्रो! तुम माँ भगवती के वास्ते मुझे मत तंग करो।'' परन्तु भगवती का नाम सुनते ही वह माँ भगवती को बुरा–भला कहने लगा। वह हकीकत से मारपीट करने लगा। दु:खी

हकीकत ने कहा– ''अगर यही शब्द मैं आपकी बीबी फातिमा के प्रति कहूँ तो क्या आपको दु:ख नहीं होगा?'' उन्होंने कहा– '' तू कहकर तो देख।'' फिर क्या था! मानो कयामत (प्रलय) आ गई। लड़कों ने खूब नमक–मिर्च लगाकर मौलवी साहिब से हकीकत की शिकायत की और हकीकत को इस आरोप में गिरफ्तार करवा दिया। मामला हाकिम मिर्जा अमीर बेग की अदालत में पहुँचा। मौलवियों से सलाह–मशविरा करने के बाद तथा हकीकत की उम्र देखते हुए हाकिम ने कहा– ''अगर तू इस्लाम कबूल कर लें तो तेरी जान बख्शी जा सकती है।'' **इस पर हकीकत बोला–'' मुझे है धर्म प्यारा, हंस के मैं बलिदान हो जाऊँ।'' धर्म बदलने से बेहतर है कि मैं कुर्बान हो जाऊँ। ''** इस मुसीबत की घड़ी में माँ कौरां ने ममता का वास्ता देकर इकलौती संतान को अपना धर्म बदलने के लिए कहा। तब हकीकत बोला– **''बलाएं हो जमाने की मुसीबत कितनी ही पाऊँ, मुझे धिक्कार है अपने धर्म से डगमगा जाऊँ''**।

हकीकत के पिता ने कहा कि धर्म बदलने के बाद तुम हमारी आँखों के सामने जीवित तो रहोगे। इस पर हकीकत बोला – ''**मुझे मंजूर है, मंजूर है जो हुक्म फरमाओ, मगर थोड़े से जीने के लिए मत धर्म छुड़वाओ।''**

इस पर मिर्जा बोला – ''बेटा, अपने माता–पिता की तो बात मान लो। अल्लाह और भगवान में कोई अंतर नहीं होता।'' इस पर हकीकत बोला– '' मिर्जा साहिब! आपका लाख–लाख शुक्रिया कि आपको मुझसे हमदर्दी है। परन्तु उस भगवान ने कुछ सोचकर हिन्दू (के घर जन्म दिया) ही बनाया है।'' धर्म के पक्के दीवाने को देखते हुए मिर्जा ने हकीकत का मुकदमा लाहौर के सूबेदार को भेज दिया। लाहौर के सूबेदार ने सारा मामला बढ़ने के बाद कहा–''देख हकीकत! तूने जो अपराध किया है उसकी सजा केवल मौत है। तेरी उमर और माता–पिता की फरियाद पर तुझे एक मौका दिया जा रहा है कि तू अपना धर्म छोड़कर इस्लाम कबूल कर ले।''

इस पर हकीकत बोला – ''प्राण बचाने के लिए मैं अपना धर्म त्याग दूँ –नहीं, सूबेदार साहिब! मुझे अपने प्राणों से धर्म ज्यादा प्यारा है। धर्म की खातिर मरूँ और धर्म की खातिर जीऊँ। धर्म पर बलिदान होकर स्वर्ग का अमृत पीऊँ।'' इस पर सूबेदार बोला– ''हकीकत, तुम्हारी मासूम उमर देखकर हम क्षमा भी कर देते। लेकिन नामुनासिब बातें सुनकर तुमने अपनी मौत को खुद दावत दे दी है।''

सन् 1734 को बसंत पंचमी के पवित्र महोत्सव पर हकीकत को वधशाला में लाया गया। वधशाला में पहुँचते ही जल्लाद ने मासूम बालक को देखकर दु:खी हृदय से हकीकत को धर्म बदलने के लिए कहा। उसके हाथ से तलवार छूटकर धरती पर गिर पड़ी, परन्तु वीर हकीकत राय ने तलवार उठाई और उसे जल्लाद को देते हुए कहा – ''जल्लाद! घबराओ मत। तुम अपने कर्त्तव्य का पालन करो। मैं हूँ कर चुका इस जहाँ से किनारा, रहे धर्म मेरा यह सिर है तुम्हारा। मकतल में हो रहा अब इम्तिहान मेरा, किन्तु जुबां पे मेरे प्रभु ओ३म् नाम तेरा।''

अगले ही पल जल्लाद ने एक झटके में वीर हकीकत राय का सिर धड़ से अलग कर दिया। उस धर्मवीर का बलिदान आज भी हमें अपने धर्म के खातिर सर्वस्व न्यौछावर करने की प्रेरणा दे रहा है।

– दिनेश कुमार,
आर्ययुवक सभा शक्ति, अमृतसर

ब्रह्म–सूत्र

द्वितीय अध्याय-तृतीय पाद (13)

तदभिध्यानादेव तु तल्लिंगात् स: ।।१३।।

अर्थ– (तदभिध्यानात्) उसके अभिध्यान यानी चिंतन से (एव) ही (तु) तो (तत्लिंगात्) उसका ज्ञान कराने वाले लिंग या लक्षण से (स:) वह।

भावार्थ :– ब्रह्म द्वारा उत्पन्न की जाने वाली सृष्टि का चिन्तन करने से ही जगत् की रचना हो जाती है। वह कारण–कार्य की व्यवस्था के बारे में चिंतन करता है जिसके अनुसार प्रकृति रूपी उपादान कारण को जगत् रूपी कार्य में परिणत करने की आवश्यकता होती है। ब्रह्म का चिंतन या संकल्प प्रकृति को प्रेरित करता है, फलस्वरूप वह कार्यरूप में परिणत होने के लिए सक्रिय हो उठनी है, या यों कहें कि उसके संकल्प मात्र से कारण तत्त्वों में क्रिया आरंभ हो जाती है अर्थात् जगत् की रचना के लिए जितनी मात्रा में सत्व, रज, तम तीनों गुणों का संयोग होना चाहिए, वह आरंभ हो जाती है।

ब्रह्म सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है। जगत् की रचना करना उसके लिए अत्यन्त साधरण काम है। शास्त्रों में ब्रह्म के इस चिंतन या अभिध्यान को ब्रह्म का ईक्षण कहा है। ऐतरेय उपनिषद् (१/१/१) में कहा है:–

"इक्षत लोकान्नुसृजा इति। स इमाँल्लोकान सृजत।।" अर्थात् उस ब्रह्म ने ईक्षण (चिंतन) किया कि मैं लोकों की रचना करूँ और उसने इन लोकों की सृष्ठि (रचना) की। ईक्षण और अभिध्यानपूर्वक जगत की रचना करना उसका लिंग (लक्षण) है। इसी लक्षण से उसकी पहचान होती है। ब्रह्म के इस ईक्षण या कामना आदि का उल्लेख उपनिषदों में अनेक स्थलों पर हुआ है। तैत्तिरीय उपनिषद् (२/६) में कहा है– **''सोऽकामयत। बहुस्यां प्रजायेयेति। स तपोऽतप्यत, स तपस्तप्त्वा इदं सर्वमसृजत यदिदं किञ्च।''** अर्थात् उसने संकल्प किया, मैं बहुत हो जाऊँ प्रजा को उत्पन्न करूँ। उसने तप किया। तप करके उसने सबको बनाया, जो कुछ भी यह दृश्यमान जगत् है। लगभग इन्हीं शब्दों में इसे छान्दोग्य उपनिषद् (६/२/३) में भी अभिव्यक्त किया है–तदैक्षत बहुस्यां प्रजायेयेति। इसे आगे कहा है–

"सेयं देवतैक्षत हन्ताहमिमांस्तिस्त्रो देवता अनेन जीवेनात्मनाऽनुप्रविश्य नामरूपे व्याकरवाणीति।"

अर्थात् वह अन्तर्यामी देवता ईक्षण करता है, मैं, इन तीन देवताओं (त्रिगुणात्मिका प्रकृति) का नाम–रूप से विस्तार कर देता है ब्रह्म के अभिध्यान (चिंतन या ईक्षण) का यह वर्णन ब्रह्म के अस्तित्व का लिंग (चिह्न) है। ब्रह्म को इस जगत् की रचना में अन्य लौकिक सहायकों या बाहरी साधनों की अपेक्षा नहीं होती। संपूर्ण संसार की व्यवस्था उसकी प्रेरणा से चलती है।

– शिष्य जानना चाहता है कि महाभूतों की उत्पत्ति का शास्त्रों में जो क्रम रहता है या कोई और? सूत्रकार इसका समाधान अगले सूत्र में करते हैं। *– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'*
सी–2ए/90 जनकपुरी,नई दिल्ली–58

आर्यसमाज सान्ताक्रुज (मुम्बई) द्वारा वैदिक विद्वान आचार्य पं. भद्रसेन जी के सुपुत्र, सार्वदेशिक सभा के प्रधान

कैप्टन देवरत्न आर्य जी का संक्षिप्त परिचय

सार्वजनिक अभिनन्दन   दिनांक : 31 जनवरी, 2010 (रविवार)   स्थान : आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई

कैप्टन देवरत्न आर्य

नाम : कैप्टन देवरत्न आर्य
पुत्रः स्व. आचार्य भद्रसेन जी (वैदिक विद्वान्) अजमेर
जन्म : 8 जुलाई, 1939 (सोजत शहर, राजस्थान)
विवाह : सुनिता आर्या, 6 अक्तूबर, 1968
प्रधान : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
विशेष कार्यकारी दण्डाधिकारी (महाराष्ट्र सरकार) (जुलाई 96 से जून 99)

स्थायी पताः 603, मिल्टन अपार्टमेन्ट्स, जुहूतारा आजाद रोड, मुंबई – 400049; दूरभाष : 26612341

योग्यताः
अ) एम.कॉम. "एडवान्स अकाऊटेन्सी" (राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर)
ब) साहित्यरत्न (हिन्दी साहित्य)
स) साहित्यरत्न "अर्थशास्त्र" (हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद)
द) फायर फायटिंग डिप्लोमा (नेशनल फायर कालेज, नागपुर)
कार्यक्षेत्र : (1) भारतीय जी० बी० नि० विभागीय कार्यालय, अजमेर (1959–62)
(2) भारतीय सैन्य सेवा (भारत–चीन युद्ध के दौरान)
(कमीशन्ड ऑफिसर तोफखाना 1963 से 1969)
वर्तमान में : अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
मेसर्स आर्य सन्स हॉटेल प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई
पदक से पुरस्कृतः अ) सैन्य सेवा पदक 1962 ब) सैन्य रक्षा पदक 1965

समाजिक गतिविधियाँः

अ) शैक्षणिक
★ आजीवन ट्रस्टी एवं मन्त्रीः आर्य रत्न मोहनलाल मोहित वेद निधि प्रतिष्ठान
★ सदस्य–प्रबन्धक समितिः रामानन्द आर्य डी.ए.वी कालेज, भाण्डुप, मुंबई
★ आजीवन ट्रस्टी एवं उप–प्रधानः अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ, नई दिल्ली
★ संरक्षक सदस्यः उत्तरी भारत सभा (रजिस्टर्ड) भाण्डुप, मुंबई (शिक्षण संस्था)
★ आजीवन ट्रस्टी एवं मन्त्रीः स्वामी ओमानन्द गुरुकुल स्कॉलरशिप ट्रस्ट, मुंबई
★ अन्तरंग सदस्यः राष्ट्रीय चेतना संगठन, नई दिल्ली
★ अध्यक्ष (प्रशासन): अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक अनुसंधान केन्द्र, मुंबई
★ आजीवन ट्रस्टी एवं मन्त्रीः समर्पण शोध संस्थान, साहिबाबाद (गाजियाबाद)

ब) सांस्कृतिक एवं धार्मिक
★ आजीवन ट्रस्टी एवं पूर्व उप–प्रधानः श्रीमती परोपकारिणी सभा, अजमेर (महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित उत्तराधिकारिणी सभा)
★ आजीवन ट्रस्टी एवं प्रधानः महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास, अजमेर
★ आजीवन ट्रस्टी एवं मन्त्रीः आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुंबई
★ महामन्त्रीः आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुंबई (6 वर्ष)
★ प्रधानः आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुंबई (1994से 1997)
★ उप–प्रधान : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली (1992–1995 व 1998–2001)
★ आजीवन ट्रस्टी एवं वरिष्ठ उप–प्रधान : श्रीमद्‌दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल उदयपुर (राजस्थान)
★ वरिष्ठ उप–प्रधानः आर्य प्रतिनिधि सभा, मुंबई
★ आजीवन ट्रस्टीः आचार्य भद्रसेन चरिटेबल ट्रस्ट, अजमेर

स) मेडिकल एवं अन्य गतिविधियाँ
★ अध्यक्षः बाम्बे गुड्स ट्रान्सपोर्ट एसोसिएशन (1996–97)
★ महामन्त्री : बाम्बे गुड्स ट्रान्सपोर्ट एसोसिएशन (1991–93)
★ सदस्यः गुड्स ट्रान्सपोर्ट लेबर बोर्ड (महाराष्ट्र सरकार) (1992–1994)
★ आजीवन ट्रस्टी एवं मन्त्रीः आर्य मेडिकल रिलीफ मिशन, मुंबई
★ आजीवन सदस्यः सेवानिवृत्त सैनिक संघ
★ आजीवन सदस्यः सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारी एसोसिएशन, मुंबई
★ सदस्य अन्तरंग सभाः इण्डियन मर्चन्ट चेम्बर मुंबई (1997–98)
★ अध्यक्ष : रेड स्वस्तिक सोसायटी, मुंबई

सम्मान–पुरस्कार
1) 'आर्य भूषण' सम्मान (13 अप्रैल, 2000) आर्य सभा पोर्ट लुईस, मॉरिशस।
2) रक्तसाक्षी पं. लेखराम स्मृति पुरस्कार (3 सितम्बर, 1999) आर्यसमाज हिण्डौन सिटी (राजस्थान)।
3) 'आर्य भूषण' सम्मान – आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा (रोहतक) द्वारा।
4) अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (23 से 26 मार्च, 2001) की अभूतपूर्व सफलता पर (29 जुलाई, 2001 आर्यसमाज जनकपुरी व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सिक्कों से तोलकर सम्मानित)
5) फीजी समिति पुरस्कार – फिजी हिन्दी साहित्य समिति द्वारा हिन्दी के प्रचार–प्रसार हेतु।

– संगीत आर्य, महामन्त्री, आर्यसमाज सान्ताक्रुज

यथा पिता तथा पुत्र : कैप्टन देवरत्न आर्य के कुछ सुन्दर संस्मरण

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

कैप्टन आर्य के बारे में कुछ लिखने के पूर्व उनके विद्वान एवं तपस्वी पिता आचार्य भद्रसेनजी के बारे में दो शब्द लिखना जरूरी है। आचार्यजी मूलतः पंजाब के थे, किन्तु बाद में वे स्थायी रूप से अजमेर में बस गये। उनका निवास कबीर मार्ग के सरगंज के एक किराए के मकान में रहे जहाँ रहकर वे आर्ष ग्रन्थों का पठन–पाठन कराया करते थे। उनके विद्यालय का नाम विरजानन्द वेद विद्यालय था। आचार्यजी का अध्ययन आर्ष व्याकरण के महान् विद्वान् पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के पास हुआ था और उन्हें ही वे गुरु जी कहकर पुकारते थे। आचार्य भद्रसेनजी का सप्ताह पर्यन्त प्रवचन जब आर्यसमाज जोधपुर में हुआ तो मैं कॉलेज का छात्र था। प्रवचन का विषय 'गोसेवा तथा गाय की उपयोगिता' जैसा कुछ था और अब तक स्मरण है कि उन्होंने अथर्ववेद के मंत्र 'यूयं गावो' मंत्र की भावभीनी व्याख्या की थी।

1950 में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के वार्षिक अधिवेशन में मैं जब प्रतिनिधि बनकर गया तो आचार्यजी से उनके निवास पर भेंट की तथा उनका साहित्य क्रय किया। स्मरणीय है कि यों तो योग तथा स्वास्थ्य पर उन्होंने अनेक ग्रन्थ लिखे किन्तु ऋषि दयानन्द की आस्तिकता तथा उनकी भगवद् भक्ति पर लिखी गई पुस्तक 'प्रभुभक्त दयानन्द और उनके आध्यात्मिक उपदेश' अपने में लाजवाब थी। कारण कि स्वामी दयानन्द की पावन आस्तिकता और उनके आध्यात्मिक उपदेशों को जिस सतर्कता से इसमें संगृहीत किया गया था, वह सचमुच अनूठा था।

आचार्यजी से भेंट करने के बाद में अनेक अवसर आये। एक बार आर्यसमाज सरदारपुरा, जोधपुर ने उन्हें यजुर्वेद पारायण यज्ञ का ब्रह्मा बनाया और वे पूरे सप्ताह भर वहाँ रहे। इसी बीच बाबू जगजीवनराम मुख्य अतिथि के रूप में वहाँ आए और आचार्यजी का प्रेरणादायक प्रवचन सुना। कैप्टन साहब के पूर्वज चाहे पंजाब के थे, किन्तु उनकी ननिहाल हमारे निकट के कस्बे सोजत में थी। उनसे भेंट करने के अवसर काफी बाद में आये क्योंकि वे सेना सेवा में सुदूर प्रदेशों में कार्यरत रहे थे। कालान्तर में जब वे ट्रांसपोर्ट व्यवसाय के उच्च स्तम्भ बने तो आर्यसमाज, सान्ताक्रुज, मुम्बई उनका प्रधान कार्यक्षेत्र रहा। देवरत्नजी चाहे मुम्बई वासी हो गये थे, किन्तु उनके परिजन तो अजमेर में ही थे। मैं जब गवर्नमेंट कॉलेज अजमेर के हिन्दी विभाग में थाा तो कैप्टनजी की सहधर्मिणी श्रीमती सुनीता मेरी क्लास में कैजुअल छात्रा के रूप में पढ़ती रहीं, कारण कि उनके ज्येष्ठ स्व. वेदरत्नजी ने उन्हें मेरे क्लास में बैठाने की मुझसे संस्तुति की थी। कैप्टन साहब की एक बहन भी मेरी छात्रा थीं जिनका विवाह कालान्तर में पं. धर्मदेव जी निरुक्ताचार्य के पुत्र से हुआ था। ये सब सम्बन्ध आत्मीय के सूत्रों वाले थे। श्री देवरत्न का प्रमुख कार्यक्षेत्र आरम्भ में मुम्बई रहा। कालान्तर में वे अखिल भारतीय ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य नेता के रूप

– जारी पृष्ठ 5 पर

विश्व में आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती की मान्यताओं, आदर्शों, नियमों को फैलाने में प्रयासरत

दिल्ली सभा की भावी योजना – (4) दिल्ली की आर्यसमाजों का इतिहास लेखन

इतिहास चाहे वह किसी व्यक्ति, संस्था व राष्ट्र का हो, उसकी सुरक्षा एवं सदुपयोग के द्वारा वर्तमान और भविष्य को सुखद व शान्तिमय बनाया जा सकता है। वर्तमान, समय का वह अत्यल्प अंश है, जिसे केवल भोगा जा सकता है। इससे बढ़कर वर्तमान के सम्बन्ध में कुछ भी कहना सम्भव नहीं। किसी श्रेष्ठ इतिहास को पढ़कर मिलने वाले त्वरित सुख के लिए उस इतिहास को कारण मानना ही पड़ेगा। जो भूत से कट जाता है, उसका न तो वर्तमान ठीक रहता है और न ही भविष्य। इतिहास की आवश्यकता व उपयोगिता के सम्बन्ध में महर्षि वाल्मीकि बड़ी सुन्दर बात बताते हैं। रामायण लेखन के अपने उद्देश्य को प्रकट करते हुए वाल्मीकि जी लिखते हैं।

रामादिवत् प्रवर्त्तितव्यं न तु रावणादिवत्'। अर्थात् रामायण लिखकर मैं भावी सन्तति को यह संदेश देना चाहता हूँ, कि वे राम की तरह आचार, विचार व व्यवहार बनाएँ, रावण की तरह नहीं। रामायण को लिखकर वाल्मीकि ने राम को अमर कर दिया। वाल्मीकि यह रामायण नहीं लिखते, तो राम की महत्ता में कोई अन्तर नहीं पड़ता। हाँ अन्तर यह रहता कि वह महत्ता हम तक नहीं पहुँच पाती, और तब से अब तक की अनगिनत पीढ़ियाँ राम के श्रेष्ठ आदर्शों का लाभ नहीं उठा पातीं। राम को, राम के उदात्त रूप में हम तक पहुँचाने का जो पुण्य प्रयास महर्षि वाल्मीकि ने किया था, हम सभी उनके इस पुरुषार्थ के लिए उन्हें सश्रद्ध स्मरण व नमन करते हैं। वाल्मीकि ने श्रीराम के इतिहास को सर्वांग रूप में हमारे जीवन–उत्थान के लिए सुरक्षित करके पीढ़ियों का अनूठा मार्गदर्शन किया है। रामायण–लेखन का यह वर्णन आर्यों के अन्दर इतिहास–बोध की भावना जगाकर उन्हें इतिहास के प्रति सजग बनाएगा, ऐसा हमें विश्वास है।

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने अपनी योजना श्रृंखला में इतिहास–लेखन को एक प्रमुख प्रकल्प के रूप में स्वीकार करके, उस पर काम करने का मन बनाया है। इस महत्त्वपूर्ण काम को हम दो स्तरों पर कर रहे हैं। प्रथम सभा ने आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वानों की समिति बनाकर इस कार्य को गति देने की योजना बनाई है। स्वाध्यायशील आर्य जानते हैं कि आर्यसमाज का बृहद् इतिहास सर्वप्रथम पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी ने लिखा था, आरंभ तो स्वामी श्रद्धानन्द ने किया था किन्तु समयाभाव के कारण वे उसे पूर्ण नहीं कर सके। उनकी मृत्यु के पश्चात उनके पुत्र पं. इन्द्र विद्यावास्पति जी ने इस गुरुतर कार्य को किया उसके बाद डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार जी ने 1975 तक का इतिहास लेखन बड़ी योग्यता से किया था। 1975 से 2010 तक के आर्यसमाज का इतिहास समिति इन अधिकारी विद्वानों के द्वारा हमें एक अमूल्य धरोहर के रूप में प्राप्त हो जाए, तो यह हमारी बहुत बड़ी निधि होगी। सभा इस दिशा में कदम उठा चुकी है, और निकट भविष्य में ही इस पर कार्यारम्भ होने की पूरी सम्भावना है।

इस कार्य के लिए आवश्यक संसाधनों की आवश्यकता होगी। हमारी समिति के विद्वानों की सुख, सुविधा एवं समस्त आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए हमें यह काम समय सीमा के अन्दर ही करना होगा। इस महनीय कार्य योजना के लिए समस्त आर्य जनों को अपने–अपने स्तर पर अपने–अपने ढ़ग से सहयोग करना चाहिए। इस निमित्त सभा अपनी अपेक्षाएँ समय–समय पर सार्वजनिक रूप से आप तक पहुँचाती रहेगी। इस विषय में अगले लेख में विस्तार से बताएगें।

दूसरा स्तर भी सभा प्रारम्भ कर ही चुकी है। सभा सार्वजनिक रूप से यह सूचना 'आर्यसन्देश' में प्रकाशित कर चुकी है, कि आर्यसमाजों के मान्य अधिकारीगण अपने–अपने आर्यसमाजों का इतिहास समस्त प्रकल्पों सहित तैयार करके सभा कार्यलय में प्रेषित करें। हमारे इस निवेदन के फलस्वरूप बहुत से समाज–अधिकारियों ने अपना विवरण सभा कार्यालय में भिजवाया है, तथा ऐसे फोन भी निरन्तर सभा कार्यालय में आते रहते हैं कि आप अपनी समय सीमा आगे बढ़ाएं, हम अपना इतिहास तैयार कर रहे हैं। आर्यसमाज के कार्यों व उपलब्धियों का इतिहास इकट्ठा करना निश्चित ही श्रम व समय साध्य कार्य है। सभा ऐसे महानुभावों की समस्या को देखकर इतिहास भेजने की अन्तिम तिथि तो आगे कर सकती है, लेकिन उसकी भी तो समय सीमा होनी ही चाहिए। हमारा ऐसे आर्यजनों से विनम्र निवेदन है कि कार्य में प्रगति लाएँ, सभा की भी समस्याएँ हैं। जो सज्जन अपना इतिवृत्त भेज चुके हैं, उनमें से कई यह पूछने के लिए भी फोन कर देते हैं, कि इतिहास का प्रकाशन कब तक हो रहा है? जो भेजने की प्रक्रिया में हैं, उनसे प्रार्थना है कि सामग्री संकलन में अधिक विस्तार से बचते हुए संक्षिप्त व उपयोगी सामग्री प्रेषित करें। इतिहास में व्यक्तिगत विवरण न होकर यथा सम्भव तथ्यों पर आधारित विवरण हो।

एक विशेष निवेदन यह है कि आपके निकटवर्ती गाँव, नगर या कस्बे में कोई आर्यसमाज निष्क्रिय पड़ी हो, और उनमें कोई ऐसे अधिकारी सक्रिय न हो अथवा उनको यह सूचना न पहुँच पा रही हो तो उन पाठको से यह निवेदन है कि जो इस लेख को पढ़ रहे हों कृपया तो उसका विवरण भी संक्षेप में अवश्य ही भेंजे अथवा उन तक सूचना देवें। प्रत्येक आर्यसमाज ऋषि दयानन्द के वैदिक अभियान का प्रचार केन्द्र है, वेद–विद्या का बीज है। आर्यसमाज है, तो वेद–विद्या के प्रचार–प्रसार की सम्भावनाएँ हैं। किन्हीं कारणों से वर्तमान में वहाँ शिथिलता है, तो उसे दूर करके उसमें जीवन फूँकने का प्रयास भी सभा द्वारा आप सबके सहयोग से किया जाएगा। इस बात के लिए सभा का पुनः आर्यजनों से निवेदन है कि वे निकटवर्ती निष्क्रिय समाज का संक्षिप्त इतिवृत्त वर्तमान परिसम्पत्तियों सहित तैयार करके अवश्य प्रेषित करें, तथा वहाँ के वर्तमान आर्यजनों के नाम, पते व दूरभाष–चलभाष आदि की जानकारी भी दें। ऐसे सज्जनों का, जो निष्क्रिय समाज का आवश्यक विवरण सभा कार्यालय को भेजेंगे, उनका विशेष धन्यवाद सहित 'आर्यसन्देश' में परिचय प्रकाशित किया जाएगा। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि हमारे उत्साही आर्यजन इतिहास के महत्त्व को समझते हुए अपना व निकटवर्ती (जो भी जानकारी में हो) आर्य समाज को इतिवृत्त अतिशीध्र सभा को प्रेषित करेंगे। इन योजनाओं के सम्बन्ध में आपके विचार व सुझाव आमंत्रित हैं। ***–रामनिवास 'गुणग्राहक'***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

एक निवेदन : *इन योजनाओं की रूपरेखा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा बहुत पहले से बना रही थी। इन्हें अब मूर्तरूप दिया जा रहा है। श्री रामनिवास जी गुणग्राहक इन योजनाओं को लेखबद्ध रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। इस कार्य में आचार्य श्री हरिप्रसाद जी भी सहयोग कर रहे हैं। सम्माननीय पाठकों से निवेदन है कि सभा द्वारा तैयार की जा रही इन योजनाओं में यदि वे किसी प्रकार भी सहयोगी बनना चाहें अथवा सुझाव देना चाहें तो वे आचार्य श्री रामनिवास जी अथवा आचार्य श्रीहरि प्रसाद जी से सभा कार्यालय –15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1 दूरभाष – 23360150, 23365959 पर सम्पर्क करें। आपके सुझावों, विचारों का हम हृदय से स्वागत करेंगे। यह इतिहास लेखन कार्य राज्यवार लिखा जाएगा।*

– विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)

पृष्ठ 4 का शेष

में सार्वजनिक जीवन में आये। बात गत सदी के आठवें दशक की है। मैं उन दिनों पंजाब विश्वविद्यालय में दयानन्द शोधपीठ का प्रोफेसर तथा अध्यक्ष था। आर्यसमाज सान्ताक्रुज ने मेरी चार दिवसीय 'दयानन्द जीवन कथा' का आयोजन किया। तत्कालीन प्रधान स्व. देवेन्द्रनाथ कपूर वेद के मर्मज्ञ तथा साहित्यिक वृत्ति के थे। स्व. ओंकार नाथ जी ने मेरी इस कथा का हृदय– काव्य पद्धति से निबंधन कर उसे सी.डी. का रूप दिया था। कैप्टन आर्य समाज के मंत्री थे।

उन्हीं वर्षों में कैप्टन देवरत्न सार्वदेशिक सभा में मुम्बई के प्रतिनिधि के रूप में प्रथम बार आये और बाद में उनकी सामाजिक गतिविधियों का निरन्तर विस्तार होता गया। सार्वदेशिक सभा के वे वर्षों तक उप–प्रधान रहे तथा कालान्तर में प्रधान पद पर आये। उन्होंने सार्वदेशिक सभा को यथार्थतः सार्वदेशिक रूप देने के लिए अफ्रीका, यूरोप, अमेरिका, कनाडा, मारिशस आदि उन देशों का भ्रमण किया जहाँ आर्य सामाजिक गतिविधियाँ चल रही थीं। इसी प्रसंग में मारिशस के आर्य नेता स्व. मोहनलाल मोहित से वैदिक शोध एवं अन्वेषण के लिए वे लाखों रुपये का अनुदान प्राप्त करने में सफल रहे। स्वामी दयानन्द के स्मारक रूप में निर्मित दयानन्द निर्वाण स्थल स्मारक अजमेर, दयानन्द स्मृति भवन जोधपुर तथा दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल उदयपुर के सांगठनिक कार्यों में उनकी भूमिका निर्विवाद रही और इन स्थलों पर अनेक प्रवृत्तियों का सूत्रपात उनके द्वारा होता रहा। इस बीच अजमेर, टांडा पानीपत आदि स्थानों में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में उनसे भेंट होती रही। सार्वदेशिक सभा के प्रधान के पद पर आने के पश्चात् वे वेद प्रचार तथा अन्य कार्यक्रमों में युगान्तरकारी परिवर्तन लाने के इच्छुक थे किन्तु पारस्परिक फूट तथा अनैक्य के कारण उन्हें उपयुक्त सफलता नहीं मिली। यह सर्वविदित तथ्य है कि कुछ ऐसे लोगों ने अनैतिक कार्यों के द्वारा सार्वदेशिक सभा के कार्यालय पर अवैध कब्जा कर लिया जिनकी ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों में लेशमात्र भी श्रद्धा नहीं रही। यह और आश्चर्य तथा पीड़ा का विषय रहा कि स्वयं को वीतराग मानने वाले कुछ संन्यासियों ने भी इन तत्त्वों को भी प्रश्रय तथा समर्थन दिया।

निश्चय ही कैप्टन देवरत्न को अपने आदर्श पिता तथा आर्य संस्कारयुक्त परिवार से वह सब मिला है जो उन्हें आर्यसमाज का नेतृत्व करने की अर्हता प्राप्त कराता है। आशा है कि निकट भविष्य में आर्यसमाज के आन्तरिक विवादों पर पूर्ण विराम लगेगा और आर्य जगत् कैप्टन साहब की अमल धवल बेदाग जीवन का मूल्यांकन करेगी तथा उनसे प्रेरण प्राप्त करेगी।

8/423, नन्दनवन, जोधपुर (राज.)

आर्यसमाज सै–7 रोहिणी में
लोहड़ी व मकर सक्रान्ति पर्व

आर्यसमाज सै0–7 रोहिणी द्वारा 6 से 10 जनवरी 2010 तक लोहड़ी एवं मकर सक्रान्ति महापर्व पर 11 कुण्डीय विशाल महायज्ञ के साथ वेदज्ञान ज्योति वर्षा का आयोजन किया गया। महायज्ञ के ब्रह्मा डॉ0 विनय विद्यालंकार व आचार्य रामकिशोर शास्त्री थे। भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य ने भजन प्रस्तुत किये। 6 जनवरी 2010 बुधवार को प्रातः प्रभात फेरी निकाल कर जन–जन तक कार्यक्रम का संदेश पहुँचाया गया। दोपहर को आर्य महिला सम्मेलन किया गया। जिसकी अध्यक्षता माता कान्ता खण्डेलवाल जी ने की। श्रीमती शशी प्रभा भजनोपदेशक द्वारा भजन प्रस्तुत किये गये। मुख्यवक्ता आचार्या श्रीमती–सुनीति आर्या ने आर्य महिलाओं को वेदोपदेश दिया।

वैदिक सम्मेलन की अध्यक्षता श्री सुखदेव आर्य तपस्वी जी ने की। मुख्य अतिथि श्री सुभाष आर्य (नेता सदन दिल्ली नगर निगम) ब्र0 राजसिंह आर्य प्रधान (दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) श्री सुखदेव आर्य (तपस्वी) आचार्य सुभाष जी ने सभी को शुभाशीष दिया। श्री सुभाष त्रेहन, यशपाल चावला, डॉ0 राजीव चावला के परिवार को शाल व गायत्री मन्त्र की फोटो देकर सम्मानित किया गया। **– अश्विनी आर्य, प्रधान**
नरेश पाल आर्य, मन्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती
जीवन चरित, घटनाओं तथा ग्रन्थों की जानकारी के लिए लॉगऑन करें
www.swamidayanand.com

आर्यसमाज डी.सी.एम.कालोनी का
वार्षिकोत्सव 26 जनवरी को

आर्यसमाज डी.सी.एम. रेलवे कालोनी का वार्षिकोत्सव 26 जनवरी (मंगलवार) प्रातः 9 से 12 बजे तक दिल्ली क्लाथ मिल रेलवे कालोनी दिल्ली –6 में आर्य नेता श्री कीर्ति शर्मा जी की अध्यक्षता में समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। समाज के प्रधान श्री रणधीर आर्य ने बताया इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के नव निर्वाचित महामंत्री श्री राजीव आर्य का यहां अभिनन्दन होगा। आर्य पुरोहित श्री जयप्रकाश शास्त्री, भजनोपदेशक श्री राजवीर शास्त्री, चौ. चन्द्रभान (पूर्व डी. सी. पी.) चौ. मनफूल सिंह आजाद, श्री वीरेन्द्र अरोड़ा, श्री राजकुमार आहूजा, श्री राजेन्द्र मदान, श्री चुन्नीलाल विज, श्री अमरनाथ गोगिया, श्री अखिलेश भारती, श्री रमेश डाबर, श्रीमती पुष्पा विज, श्री संजीव आर्य आदि कार्यक्रम में सम्मिलित होंगे।

– चन्द्रमोहन आर्य, पत्रकार

निर्वाचन समाचार

आर्य युवक परिषद्, दिल्ली
एच–64, अशोक विहार, दिल्ली

प्रधान	: श्री राम मेहर सिंह
महामंत्री	: श्री ओमप्रकाश
कोषाध्यक्ष	: श्री वेदपाल गुप्ता

आर्यसमाज जालना (महाराष्ट्र)

प्रधान	: पारसनन्द यादव
मंत्री	: बद्रीप्रसाद सोनी
कोषाध्यक्ष	: मनीष नन्द

शोक समाचार
लाला धनपत राय का निधन

8 नवम्बर 2009 को प्रातः आदरणीय स्व. लाला धनपत राज जी आर्य का हृदयगति अवरोध के कारण निधन हो गया। आप आर्य केन्द्रीय सभा पलवल के संरक्षक एवं जन सेवा समिति पलपल (रजि0) के संस्थापक अध्यक्ष थे। मरणोपरान्त नेत्र–दान कर लाला जी ने अपने निःस्वार्थ परोपकारी जीवन का परिचय दिया।

श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता करते हुए स्वामी आर्य वेश जी लाला जी को भीष्म पितामह बताया। इसके अतिरिक्त स्वामी श्रद्धानन्द जी श्री नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' श्री राजेन्द्र जी बीसला, श्री लक्ष्मी चन्द जी, ग्रामीण व शहर पलवल की समस्त आर्य समाज के प्रतिनिधियों ने भागलेकर श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

मा. वीर भान कुकरेजा का निधन

मा. वीर भान कुकरेजा, उप–प्रधान आर्य समाज जवाहर नगर, पलवल 19–11–09 वीरवार को निधन हो गया। स्वामी श्रद्धानन्द व अन्य वक्ताओं ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा, वह एक कर्मठ, ईमानदार, कर्त्तव्यपरायण, सेवाभावी, व ईश्वर भक्त थे।

श्री रामवृक्ष आर्य का निधन

आर्यसमाज के प्रतिष्ठित संन्यासी स्वामी श्रेयोनन्द विदेह यति जी के पिता श्री रामवृक्ष आर्य जी का उनके निवास मोहन गार्डन नई दिल्ली में दिनांक 18 जनवरी को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार अगले दिन नवादा ओम विहार स्थित श्मशानघाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पद्चिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। –सम्पादक

आर्य संस्थाएं इतिहास लेखन हेतु जानकारियां भेजें

1. अपनी आर्यसमाज की स्थापना के सम्बन्ध में 10–15 पंक्तियां लिखें जिसमें उस समय के क्षेत्र की परिस्थितियां, किन के घर से आरम्भ हुआ, किन्होंने किया, आदि का भी उल्लेख हो।
2. आर्यसमाज की स्थापना की तिथि, संस्थापकों के नाम एवं परिचय सहित – यथासम्भव रिकार्ड के अनुसार हो तो बेहतर है।
3. आर्यसमाज के वर्तमान भवन के बृहद् तीन–चार चित्र अलग–अलग कोण से खींचकर भेजें जिसमें आर्यसमाज का नामपट्ट लिखा हिस्सा आ जाए, तो बेहतर है। (चित्र सीडी में भी भेजें)
4. आर्यसमाज द्वारा वर्तमान में संचालित समस्त गतिविधियों की जानकारी।
5. स्थापना से अब तक किए गए मुख्य कार्यों का विवरण।
6. वर्तमान के तीन पदाधिकारियों (प्रधान, मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष) के नाम व फोटोग्राफ एवं महिला आर्यसमाज के भी उपरोक्त तीन पदाधिकारियों के फोटोग्राफ। (फोटो सीडी में भी भेजें) प्रत्येक फोटोग्राफ के पीछे उनका नाम अवश्य लिखा हो।
7. स्थापना काल से अब तक रहे अधिकारियों की सूची कार्यकाल सहित (यदि सम्भव हो तो)
8. वे कार्य जिनसे आपकी आर्यसमाज ने विशेषता प्राप्त की हों।
9. यदि कोई महान् व्यक्तित्व आपकी आर्यसमाज से सम्बन्धित रहे हों तो उनका विवरण परिचय अवश्य दें।
10. आर्यसमाज से सम्बन्धित कोई ऐसा ऐतिहासिक दस्तावेज जिसकी फोटोप्रति छापना इतिहास की दृष्टि से आप उत्तम समझें तो उसकी सॉफ्ट कॉपी करके अवश्य भेजें।
11. सक्रिय आर्यसमाजों से निवेदन है कि यदि उनके आस–पास के क्षेत्र में यदि कोई आर्यसमाज निष्क्रिय है तो उसके बारे में भी सूचना दें ताकि उस समाज को सबके सहयोग से सक्रिय बनाया जा सके।
12. आर्यसमाज के प्रकल्प जैसे – विद्यालय, गुरुकुल, औषधालय, अनाथालय, गौशाला आदि के संचालन के बारे में जानकारी दें।
13. धन राशि अभी न भेजें, प्रक्रिया चल रही है। आपके द्वारा भेजे गए विवरण को व्यवस्थित कर हम उसे आपके पास पुनरावलोकन के लिए भेजेंगे। आप द्वारा अन्तिम स्वीकृति मिलने के बाद उसे संकलन में संकलित किया जाएगा, जिससे कि किसी प्रकार की त्रुटि न रह सके। उसी समय आप यहां से सूचना मिलने पर धन राशि भेजें।

नोटः इन सबके अतिरिक्त अपनी आर्यसमाज के बारे में कुछ विशेष जानकारी/टिप्पणी देना चाहें तो उसे भी अलग से अवश्य ही दे देवें।

विशेष नोटः 1. इतिहास ग्रन्थ में प्रत्येक आर्यसमाज के विवरण के लिए दो पृष्ठ आरक्षित होंगे। जिसमें आधे पृष्ठ पर फोटो तथा शेष डेढ़ पृष्ठ पर आर्यसमाज का उपरोक्त वर्णन सम्पादित कर प्रकाशित किया जाएगा। 2. यदि समाज 50 वर्ष से अधिक पुराना है, वह चाहे तो अतिरिक्त शुल्क 750/– रुपये देकर तीसरा पृष्ठ भी ले सकते हैं। 3. ग्रन्थ का आकार 20×30×8 होगा। फोटो रंगीन प्रकाशित होंगे। इतिहास लेखन समिति ने प्रत्येक आर्यसमाज को 1000/– रुपये प्रति पृष्ठ की दर से शुल्क निर्धारित किया है। यह ग्रन्थ लगभग 700–800 पृष्ठों का होगा तथा दो भागों में प्रकाशित होगा। दोनों भागों का अनुमानित मूल्य 250/– रुपये होगा। यह ग्रन्थ आर्यसमाजों के इतिहास लेखन की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। 4. इस ग्रन्थ में जानकारी भेजने वाली प्रत्येक आर्यसमाज/संस्था को ग्रन्थ की 5 प्रतियां निःशुल्क दी जाएंगी। 5. अपने पत्र एवं जानकारियां **'संयोजक, दिल्ली आर्यसमाज इतिहास लेखन समिति'** – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1 के पते पर शीघ्रातिशीघ्र भेज देवें। यह कार्य समय साध्य है अतएव इसको पूर्ण होने में कुछ समय लगेगा। अतः सभी समाजों से निवेदन है कि अपने विवरण यथाशीघ्र भेजें, जिससे इस दिशा में आगामी कार्यवाही की जा सके।

– ब्र. राजसिंह आर्य, प्रधान (9350077858)
विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)

आर्यसमाज, साकेत नई दिल्ली में नवचेतना शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज साकेत में 6 नवम्बर से 13 नवम्बर तक नवचेतना शिविर का आयोजन किया गया। इसमें कन्या गुरुकुल आमसेना (उड़ीसा) तथा गुरुकुल सोना बेड़ा से आई 10 छात्राओं ने तथा 2 शिक्षकों ने भाग लिया। गुरुकुल की छात्राओं में नई जागृति लाना और महानगर के दर्शनीय पर्यटक स्थलों का भ्रमण करा उनके ज्ञान को बढ़ाना इस शिविर के उद्देश्य थे। सुदूर वनांचलों

की छात्राओं को शहर में रहकर अनेक विषयों की जानकारी प्राप्त करने का सुअवसर मिला। इससे उनमें आत्म विश्वास बढ़ा।

छात्राओं के आवास व भोजन की व्यवस्था आर्यसमाज साकेत के सदस्यों ने की। अनेक परिवारों ने उन्हें उपहार भी दिए। आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री व मनजीत शास्त्री ने शिविरार्थियों को दिल्ली का भ्रमण कराया। डॉ. पूर्ण सिंह डबास (प्रधान) की अध्यक्षता में शिविर आयोजित हुआ। प्रधान जी ने छात्राओं को संसद भवन, नेहरू तारामण्डल, बहाई मन्दिर, कुतुब मीनार, लाल किला, इण्डिया गेट आदि दिखाने का विशेष प्रबन्ध भी किया। 14 नवम्बर को समारोहपूर्वक निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर छात्राओं को विदाई दी गई। – *मन्त्री*

'वैदिक संस्कृति में स्त्री का महत्त्व' पुस्तक का विमोचन

युवा किसी भी देश की रीढ़ होती है युवाओं को अपनी गौरवमयी संस्कृति को पहाचान कर उस पर गर्वित होना चाहिए। उक्त उद्‌गार स्वामी अमृतानन्द जी ने वैदिक संस्कृति ज्ञान वर्धिनी प्रतियोगिता व आर्यसमाज खेड़ा अफगान के प्रधान आदित्यप्रकाश गुप्त द्वारा लिखित 'वैदिक संस्कृति में स्त्री का महत्त्व' नामक पुस्तक के विमोचन के अवसर पर व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि सम्पूर्ण विश्व वेद की महत्ता को स्वीकार कर रहा है जिसके फलस्वरूप अमेरिका की संसद का शुभारंभ वेद मंत्र के उच्चारण से हो रहा है तथा ओलम्पिक खेलों की मशाल भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल को वेद मंत्रोच्चारण के बाद ही सौंपी गयी है। युवा अपने आचरण को ऊंचा करके देश को नई बुलन्दियों पर पहुँचा सकता है। आदित्यप्रकाश गुप्त ने कहा कि गौहत्या पर कठोर कानून बनाकर रासुका लगायी जाये और गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाए। स्वामी जी द्वारा वैदिक संस्कृति ज्ञान वर्धिनी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली बालिका कु0 नेहा सिरोही, द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाली कु0 दीपा तथा शिखा आर्या को तथा तीस प्रतिभागियों को तृतीय पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया एवं समस्त प्रतिभागियों को सान्तवना पुरस्कार दिया गया है। इस अवसर पर मामचन्द आर्य, सुखपालसिंह, अमित आर्य, चन्द्रशेखर मित्तल, रणधीर सिंह, राजेश त्यागी, पवन रावल, कुवरपाल, हरिकृष्ण, मदनसिंह, बलवन्त आदि उपस्थित थे।

– *राजेश कुमार आर्य मन्त्री*

सत्यार्थप्रकाश परिचर्चा का आयोजन सम्पन्न

22–11–09 को आर्यसमाज रावतभाटा में 'सत्यार्थप्रकाश एक परिचर्चा' का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति कोटा के प्रधान श्री रामप्रसाद याज्ञिक ने की। मुख्य अतिथि जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान श्री अर्जुन देव चड्ढा थे। विशिष्ट अतिथि उप प्रतिनिधि हरयाणा के प्रधान श्री सत्यपाल आर्य, आर्यसमाज विज्ञान नगर के प्रधान श्री जे.एस.दूबे, होम्यो फिजीशियन श्री के.एल. दिवाकर जी थे। कार्यक्रम में श्री सुमेश कुमार गांधी, श्री चंद्रमोहन कुशवाह ने भी सहयोग दिया।

कार्यक्रम शुभारंभ प्रातःकालीन यज्ञ से हुआ जिसमें यजुर्ववेद के 21वें अध्याय की विशेष आहुतियाँ दी गई। परिचर्चा का शुभारम्भ श्री हरिओम शर्मा ने पं. जयगोपाल कविरत्न की सत्यार्थ प्रकाश कवितामृत "रचना गान" से किया। सर्वश्री रूपा व्यास, विनोद कुमार त्यागी, योगेश आर्य, मोहन लाल, रमेश चंद, दिलीप भाटिया, डॉ. अन्नपूर्णा श्रीवास्तव, दिनेश कुमार छाजेड़, ओमप्रकाश आर्य, रामप्रसाद याज्ञिक, सत्यपाल आर्य (हरियाणा), के. एल. दिवाकर, अर्जुन देव चड्ढा ने सत्यार्थ प्रकाश के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला और उसके महत्त्व बताया।

माता सरला आर्या जी की स्मृति में

खेलकूद प्रतियोगिताएं आयोजित

27–12–09 को 83वाँ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर माता सरला आर्या की पुण्य स्मृति में सभी आयु वर्ग के लिए खेल–कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें श्री विजेन्द्र आर्य श्री विनय आर्य महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सपरिवार आये। और आपकी माता सरला आर्या एक विदुषी महिला थीं और तन–मन धन से आर्य समाज के लिए समर्पित थीं तथा सदा वेदोपदेश सरल तरह से लोगों तक पहुँचाती थीं। आपकी माता जी एवं स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सभी को इनके जीवनों से शिक्षा लेकर उन्नति की ओर अग्रसर रहना चाहिए। श्री दुर्गा प्रसाद कालड़ा आर्य ने भी सभी को आशीर्वाद दिया।

छोटे से लेकर बड़ों तक सभी ने बढ़–चढ़कर इस कार्यक्रम में भाग लिया और विजेताओं को मैडल पुरुस्कार पहनाकर सम्मानित किया गया।

स्वाईन फ्लू की होम्योपैथिक दवा वितरित

17 नवम्बर, आर्यसमाज जिला सभा द्वारा स्वाइन फ्लू से बचाव हेतु रोग प्रतिरोधक होम्योपैथिक दवा का निः शुल्क वितरण किया गया।

इस अवसर पर पंजाबी समाज समिति के पदाधिकारी महेन्द्र निझावन, दर्शन पिपलानी, हरीश नागपाल, सुरेन्द्र निझावन भी उपस्थित थे।

19 नवम्बर को आर्यसमाज जिला सभा ने रंग बाड़ी स्थित मधु स्मृति संस्थान के छात्र–छात्राओं को स्वाइन फ्लू से बचने के लिए होम्योपैथिक दवा की खुराक पिलायी।

25 नवम्बर को सभा द्वारा गायत्री विहार स्थित ब्राइट लेंड सीनियर सैकेन्ड्री स्कूल में उक्त रोग से बचाव के लिए दवा बांटी गयी। स्कूल की डायरेक्टर श्रीमती लीला आड़े ने आर्यसमाज के कार्यों को सहारा और प्रधान अर्जुन देव चड्ढा को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया।

10 दिसम्बर को प्रेस क्लब कोटा एवं आर्यसमाज, जिला कोटा के संयुक्त तत्वाधान में "स्वाईन फ्लू" से बचाव हेतु प्रेस क्लब भवन में प्रेस क्लब सदस्य अन्य पत्रकार उनके परिजन एवं आमजन करीब 450 लोगों को काढ़ा पिलाया गया। – ***जे. एस. दूबे, प्रधान***

आर्यसमाज विज्ञान नगर कोटा में

शान्ति यज्ञ का आयोजन

27 दिसम्बर को आर्यसमाज जिला सभा कोटा की ओर से आर्यसमाज विज्ञान नगर ने आर्यसमाजों के संयुक्त तत्त्वावधान में सामूहिक यज्ञ किया गया। चम्बल नदी पर बन रहे विशाल हेंगिंग ब्रिज के टूटने से हुई भीषण दुर्घटना में मृतकों की आत्माओं की शांति की कामना करते हुए श्रद्धांजलि दी।

–जे. एस. दूबे

महाशय मनफूल सिंह आर्य की 22वीं पुण्यतिथि पर

शान्तियज्ञ एवं अभिनन्दन

हिन्दी सत्याग्राही स्व. महाशय मनफूल सिंह आर्य जी की 22वीं पुण्यतिथि के अवसर पर 30 जनवरी, 2010 शनिवार को असावटा रोड, पलवल में शान्ति यज्ञ एवं अन्तर्राष्ट्रिय आर्य महासम्मेलन, मथुरा की सफलता में विशिष्ट सहयोग एवं सक्रिय योगदान देने वाले आर्य नेताओं तथा कर्मठ कार्यकर्ताओं का अभिनन्दन किया जायेगा। इस अवसर पर यज्ञ : प्रातः 8 से 10 बजे तथा अभिनन्दन समारोह : प्रातः 11 से 1 बजे तक होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता : आचार्य बलदेव जी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा) करेंगे। भजन उपदेशः महाशय वेगराज आर्य, श्रीमती सुदेश आर्या के होंगे। – ***हरिश्चन्द्र शास्त्री, अध्यक्ष***

स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का

110वां जन्मदिवस

स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का 110वां जन्म दिन 11, 12, 13 अप्रैल 2010 को दयानन्द मठ, दीनानगर में धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर 12 अप्रैल को 2 से 5 बजे तक वैदिक यति मण्डल की बैठक होगी।

– ***स्वामी सदानन्द***
दयानन्द मठ, दीनानगर, जि. गुरुदासपुर (पंजाब) – 143531

आर्य वीर दल (दिल्ली प्रदेश) के तत्वावधान में

भाषण एवं नाट्य प्रतियोगिता

दिनांक : 31 जनवरी, 2010, समय : 12.00 बजे दोपहर
स्थान : आर्यसमाज मन्दिर, नांगलराया, नई दिल्ली–110046

आयु वर्ग – 8 वर्ष से 17 वर्ष तक **भाषण विषय :–** मैं और मेरा भारत
आयु वर्ग – 17 वर्ष से 24 वर्ष तक
भाषण विषय :– वर्तमान परिस्थतियों में आदर्श युवा चरित्र

नाट्य प्रतियोगिता (सभी आयु वर्ग)

विषय : महापुरुषों के जीवन प्रसंग, जनचेतना, देशभक्ति से सम्बंधित
नोट :– 1) – प्रत्येक प्रतियोगी को 3–5 मिनट का समय देय होगा। 2) – प्रत्येक प्रतियोगी को प्रमाण पत्र दिया जायेगा। 3) – निर्णायकों का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा। 4) – पुरस्कार राशि दोनों वर्गों के लिए अलग–अलग है।
आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर आर्यवीरों का उत्साहवर्धन करें।

– वीरेन्द्र आर्य (संचालक) **सुन्दर आर्य (महामन्त्री)**

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

18 जनवरी, 2010 से 24 जनवरी, 2010

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२००९-२०११
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक २१/२२-०१-२०१०
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२००९-११
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

प्रतिष्ठा में,
श्री.........................

लो फिर आ गई होली

आओ फिर सब मिलकर मनाएं

आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह

रविवार २८ फरवरी, २०१०

समय : सायं ३.३० से सायं ७.०० बजे तक

आर्यजन अभी से तैयारियां आरम्भ कर देवें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के 111वें स्थापना दिवस के अवसर पर कोलकाता में आयोजित बंगाल प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता **मूर्धन्य आर्य जी** संन्यासी एवं सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान **आचार्य बलदेव जी** ने की। उससे पूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के कार्यालय के नवनिर्मित हॉल एवं पुस्तक विभाग का उद्घाटन **महाशय धर्मपाल जी** एवं **आचार्य बलदेव जी** के करकमलों से हुआ। सम्मेलन में सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान **श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल जी, मंत्री प्रकाश जी आर्य,** आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के पूर्व प्रधान **श्री धर्मपाल आर्य जी**, दिल्ली सभा के महामंत्री श्री **विनय आर्य जी,** आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के कोषाध्यक्ष श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी,देवेन्द्र पाल वर्मा जी (उ. प्र.) गंगा प्रसाद जी, रामेन्द्र गुप्त जी (बिहार), भारतभूषण आर्य जी (झारखण्ड) दलवीर सिंह राघव जी (भोपाल) एवं अन्य आर्य नेता एवं सारे भारतवर्ष से पधारे विद्वान जिनमें आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, डॉ. धर्मवीर, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, डॉ. ज्वलंत शास्त्री प्रमुख थे।

सारे बंगाल के दूर-दूर से पधारे आर्यजनों में सम्मेलन को लेकर काफी उत्साह देखा गया। सम्मेलन के संयोजक आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के प्रधान आनन्द कुमार आर्य ने समस्त आगन्तुक महानुभावों का पधारने पर स्वागत एवं धन्यवाद किया। बंगाल सभा के महामंत्री श्री दीनदयाल गुप्त ने अथक परिश्रम करके कार्य करने वाले कार्यकर्त्ताओं का स्वागत किया तथा सभा की ओर से दोनों महानुभावों ने मुख्य कार्यकर्त्ताओं को प्रतीक चिह्न भी भेंट किए।

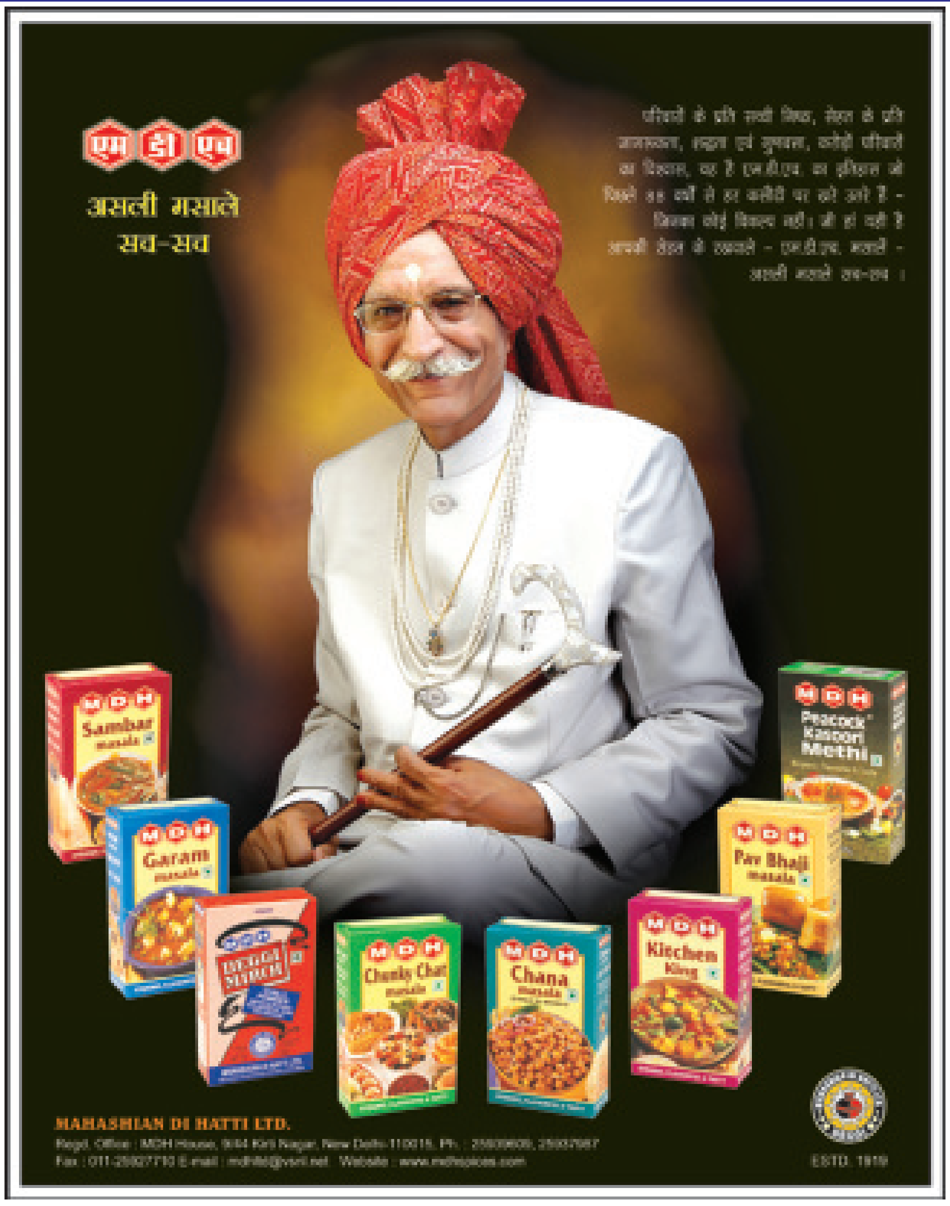

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली-१; फोन : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र० राजसिंह आर्य   सह सम्पादक : विनय आर्य   व्यवस्थापक : सुशील महाजन   सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर